Bihar Board Class 6 Social Science History Notes Chapter 12 नए साम्राज्य एवं राज्य

पाठ का सारांश

- समुद्रगुप्त को गुप्तवंश का सबसे महान् शासक, माना जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की भी उपाधि धारण की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के बाद इसका पुत्र कुमारगुप्त उत्तराधिकारी बना।
- कुमारगुप्त का उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्त बना।
- गुप्तों ने एक प्रभावशाली शासन तंत्र की स्थापना की।
- हर्ष के संदर्भ में हमें उसके राजकवि बाणभट्ट की कृति हर्ष चरित, – मधुवन, बांसखेड़ा और संजान, ताम्रपत्र लेख एवं ह्वेनसांग के यात्रावृतांत आदि से जानकारी मिलती है।
- पुलकेशियन द्वितीय के संदर्भ में जानकारी हमें कई अभिलेखों से मिलती है। इनमें पुलकेशियन का दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित एहोल अभिलेख जिससे हर्ष पर विजय आदि के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करते हैं।
- दक्षिण भारत के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास में पल्लवों का महत्वपूर्ण स्थान है। पल्लवों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक महेन्द्रवर्मन प्रथम (600-630) हुआ। पल्लवों को द्रविड़ शैली के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। पल्लवकालीन वास्तुकला के उदाहरण राजधानी कांचीपुरम् एवं महाबलीपुरम् में पाये जाते हैं।
- प्राचीन भारत में शिक्षा के जितने भी केन्द्र थे उनमें नालन्दा का – स्थान सर्वोपरि है।
- भारत के अन्दर के पड़ोसी राज्यों ने 'उपहार प्रदान कर एवं राजनिष्ठा का प्रमाण देकर' समुद्रगुप्त के सामने आत्मसमर्पण किया।
- बाहरी क्षेत्रों के शासक, जो शायद शकों एवं कुषाणों के वंशज थे। इसमें (सिहल प्रदेश) श्रीलंका के भी शासक थे।
- समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त को हटाकर इसका योग्य पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय शासक बना।
- दक्षिण दिल्ली के मेहरौली स्थित लौहस्तंभ में चन्द्र नामक शासक का उल्लेख है जिसे चन्द्रगुप्त द्वितीय ही समझा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल शक्ति और समृद्धि का सूचक था।
- गुप्त साम्राज्य का भारत के राजनीति एवं सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है।
- आर्यावर्त क्षेत्र के शासकों को समुद्रगुप्त पराजित करके सीधे-सीधे अपने नियत्रंण में कर लिया। इस क्षेत्र में इसने नौ शासकों को पराजित किया।

https://www.evidyarthi.in/